रौशन सितारा

अब्दुल्ला कमाल

बच्चोंकी कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारी बात

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

रोशन सितारा

अब्दुल्ला कमाल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

: :

रणदिवे

मूल्य :

दो रुपये

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई ४०० ००५

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई ४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ -२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई ४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७ महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

रोशन सितारा

"ताशी, रूमी, अब तुम लोग सो जाओ। रात बहुत हो चुकी है," दादी अम्मा ने ताशी और रूमी को जागते हुए देखकर कहा।

रूमी यह सुनते ही झट से उठा और दादी मां की गरदन में बाहें डालकर बोला, "दादी मां, पैगम्बरोंवाली कहानी सुनाइए, फिर हम सोयेंगे।"

ताशी भी उठकर बैठ गयी और बोली, "दादी मां, रूमी को कहानी मत सुनाइए। यह गन्दा लड़का है, मोहल्ले के लड़कों से लड़ता है।"

दादी मां ने रूमी का कान पकड़ा और बोलीं, "रूमी, यह कितनी बुरी बात है। तुम अपने साथियों से लड़ते हो? जानते हो, ऐसे बच्चों से अल्लाहताला नाखुश हो जाता है।"

"और जो लड़ते नहीं उनसे?" रूमी ने अचम्भे से पूछा।

"उन बच्चों से खुदा खुश होता है। उन्हें ढेर-सी चीजें, टाफियां, चाकलेट और आइसक्रीम देता है। है ना दादी मां?," ताशी ने अपनी जानकारी का रौब जमाया।

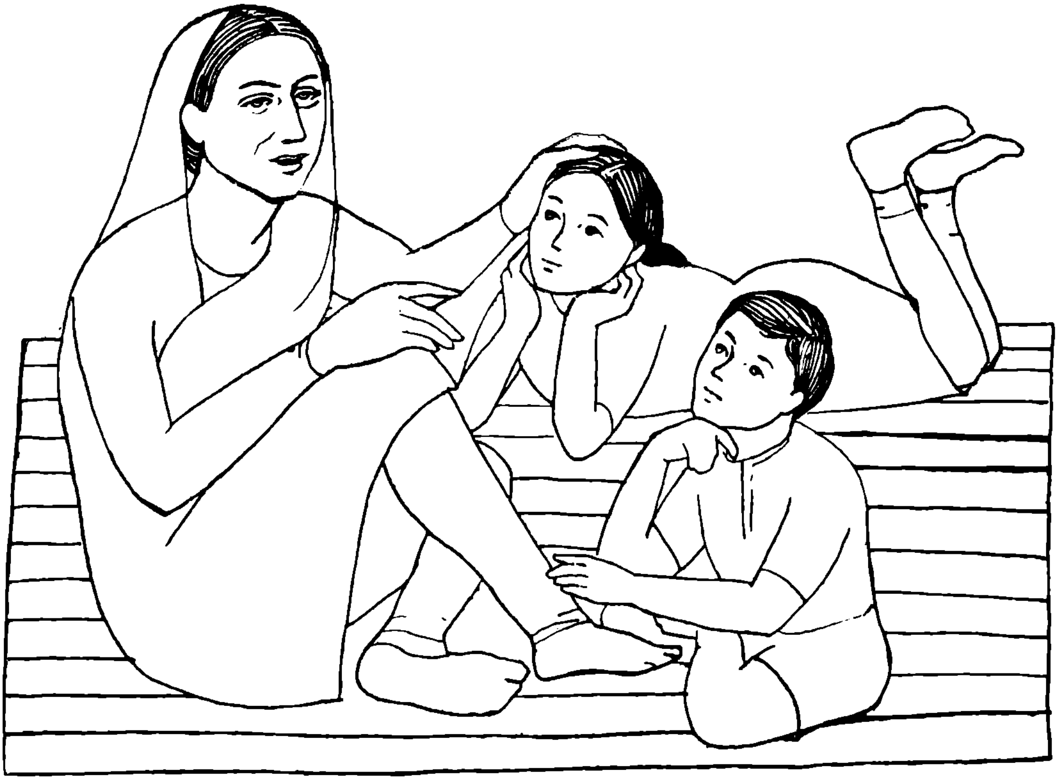

" हां, तुम ठीक कहती हो। अच्छा, सुनो। आज किसी पैगम्बर की नहीं, एक बादशाह की कहानी सुन लो," दादी मां ने कहा।

" नहीं दादी मां, हमने बहुत से बादशाहों की कहानियां सुनी हैं। सब एक जैसी होती हैं," ताशी ठुनकती हुई बोली।

" अरे बाबा, यह वैसे बादशाहों की कहानी नहीं है। यह तो एक ऐसे बादशाह की कहानी है जो बड़े पाक और नेक-धर्मात्मा आदमी थे," दादी मां ने समझाया।

" धर्मात्मा किसे कहते हैं दादी मां?" रूमी ने सवाल किया।

" धर्मात्मा खुदा के दोस्त को कहते हैं," दादी मां ने जवाब दिया।

" खुदा का दोस्त कैसे बनते हैं दादी मां ?," रूमी ने फिर पूछा।

" अच्छे-अच्छे काम करके। जो लोग दूसरों से प्रेम करते हैं, खुदा उन्हें अपना

दोस्त बना लेता है," दादी मां ने समझाया।

"तो क्या वह बादशाह अच्छे-अच्छे काम करता था और दूसरों से प्रेम भी रखता था?," ताशी ने पूछा।

"हां, वह लोगों से प्यार भी करता था, और उनके भले का काम भी करता था।"

"दादी मां, फिर तो उसी की कहानी सुनाइए आज," ताशी जल्दी से बोली।

"हां, आज मैं उसी बादशाह की कहानी सुनाऊंगी, लेकिन तुम लोग खामोश तो रहोगे न?," दादी मां बोलीं।

"हमलोग बिलकुल चुप रहेंगे दादी मां। आप कहानी सुनाइए," रूमी ने वादा किया।

"तो सुनो," दादी मां ने कहानी शुरू की:

"किसी समय बलख नाम के एक देश में अदहम नाम का एक बादशाह राज करता था। उस बादशाह का एक सुन्दर बेटा था, जिसका नाम शाहजादा इब्राहीम था।

शाहजादा इब्राहीम बचपन से ही बहुत बुद्धिमान और दयालु था। वह अपने साथियों और दूसरे लोगों से बहुत प्रेम करता था। उनके दुख-दर्द में काम आता था। गरीबों-दुखियों की मदद करता था। उसकी प्रजा उससे खुश रहती थी और उसे दुआ देती थी।

"बादशाह अदहम की मौत के बाद, बलख के लोगों ने इब्राहीम को राजगद्दी पर बिठाया। अब बादशाह इब्राहीम, इब्राहीम बिन अदहम कहलाने लगा। लेकिन बादशाह बनने के बाद भी उनके दिल में जरा घमंड न आया। वह प्रजा से उसी तरह प्रेम करता, उनके दुख-दर्द में उसी तरह काम करता, गरीबों और दुखियों की उसी तरह मदद करता। बल्कि जबसे वह बादशाह हुआ था, अपनी प्रजा के सुख-दुःख पर ज्यादा ही ध्यान देने लगा था।"

"दादी मां, वह खुदा का दोस्त कब बना?," रूमी बड़ी देर तक चुप रहने के बाद बोल ही पड़ा।

"बीच में बोलने से मैंने मना किया था ना?," दादी मां ने रूमी को झिड़का।

"अच्छा, अब नहीं बोलूंगा। आप सुनाइए," रूमी ने जल्दी से अपने कान पकड़े।

"खैर, तो सुनो। इब्राहीम बिन अदहम को बलख पर राज करते बहुत समय बीत गया था।

"राज ऐसा था कि किसी को न कोई दुख, न शिकायत। चारों तरफ खुशहाली। चोर-उच्चकों का कोई डर नहीं। लोग अपने घर के दरवाजों में कभी ताला नहीं लगाते, और क्या हिम्मत कि कोई किसी को सताए, परेशान करे या अत्याचार करे। कहा जाता है कि इब्राहीम बिन अदहम के राज में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे।

जैसा बादशाह, वैसी प्रजा।

प्रजा भी एक-दूसरे से प्रेम करती थी। लोग खुदा की उपासना करते थे। न कोई बुरा काम करता था, न कोई चोरी करता था। किसी चीज की कमी ही नहीं थी कि कोई चोरी करता। वहां तो उलटे लोग ऐसे आदमियों को ढूंढ़ते थे, जिन्हें मदद की जरूरत हो।

एक रात की बात है।

इब्राहीम बिन अदहम अपने कमरे में सो रहे थे। अचानक आधी रात को उनकी आंखें खुल गयीं। क्या देखते हैं कि सारा कमरा रोशनी से भरा हुआ है। उन्हें इस पर बड़ा अचरज हुआ, क्योंकि वे रात में अपने कमरे का चिराग बुझाकर सोते थे।

फिर यह रोशनी कैसी?

अजीब ठंडी-ठंडी रोशनी थी, आंखों से होकर दिल में उतरी जा रही थी।

इब्राहीम बिन अदहम ने कमरे में चारों ओर देखा।

उन्होंने देखा कि कमरे के एक कोने में सफेद दाढ़ीवाले एक धर्मात्मा, सफेद कपड़े पहने खड़े हैं। उनके हाथ में एक मोटी किताब है और दूसरे हाथ में कलम। वे उस किताब में कुछ लिख रहे हैं। उनके शरीर और मुख से रोशनी फूट रही थी। यही वह रोशनी थी, जो कमरे में फैली हुई थी, और सकून दे रही थी।

इब्राहीम बिन अदहम को अचम्भा हुआ कि इस बन्द कमरे में कोई कैसे चला आया।

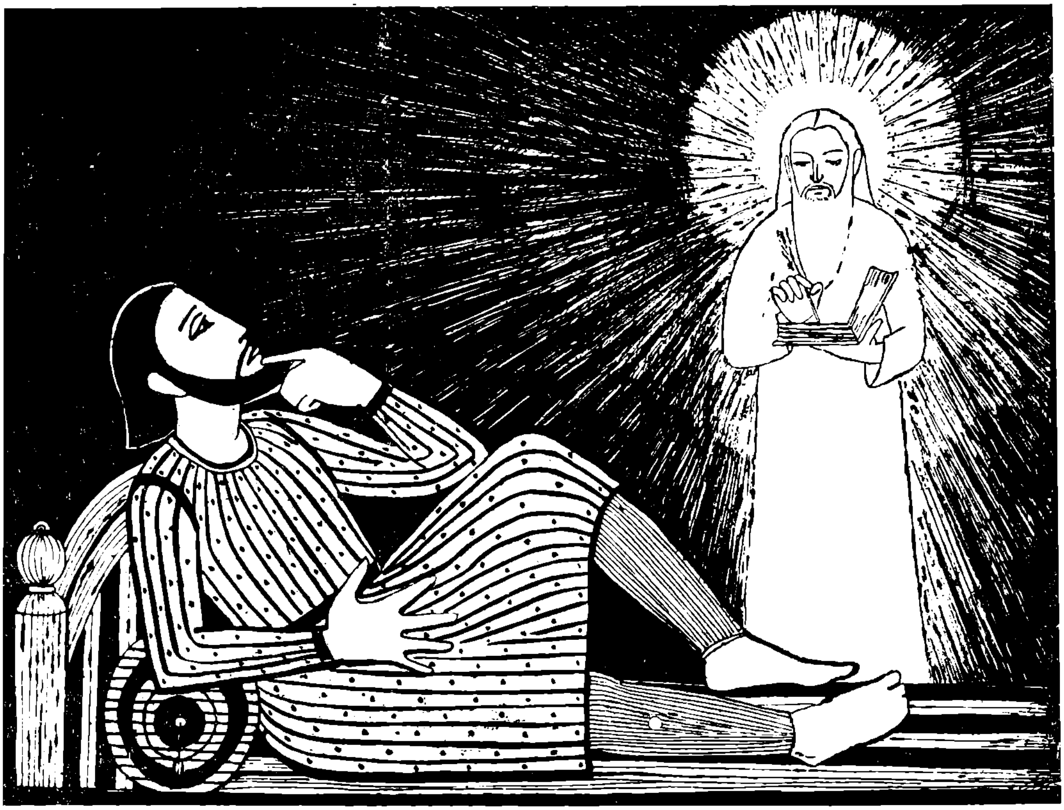

उन्होंने डरते-डरते इस रोशनीवाले ।र्मात्मा से पूछा, "आप कौन हैं और इस कताब में क्या लिख रहे हैं ?"

"मैं खुदा का फरिश्ता हूं और इस कताब में खुदा से प्रेम करनेवालों के ाम लिखा रहा हूं," धर्मात्मा ने जवाब दया।

"क्या इस किताब में मेरा नाम भी ?," इब्राहीम बिन अदहम ने झिझकते हुए पूछा और कहा, "मेरा नाम इब्राही बिन अदहम है।"

फरिश्ते ने किताब के एक-एक पन्न उलट-पलट कर देखे, फिर सिर हिलात हुए बोला, "नहीं, इस किताब में कह तुम्हारा नाम नहीं है।"

इब्राहीम बिन अदहम उदास हो गये

फरिश्ता किताब बन्द करके ज वापस जाने लगा तो उन्होंने नम्रता

कहा, "सुनिए, मेहरबानी कर खुदा से यह तो पूछिएगा कि जो लोग दूसरों से प्यार करते हैं, उनके बारे में उसका क्या विचार है ?"

फरिश्ते ने कहा, "अच्छी बात है," और वापस चला गया।

दूसरी रात फिर उसी समय इब्राहीम बिन अदहम की आंख खुल गयी। कमरा उसी तरह रोशनी से भरा हुआ था और फरिश्ता उसी तरह किताब में कुछ लिख रहा था।

इब्राहीम बिन अदहम ने फरिश्ते को सलाम किया और उससे पूछा कि खुदा ने क्या जवाब दिया।

फरिश्ते ने किताब पर नजर डाली और कहा, "इब्राहीम बिन अदहम, तुम्हारा नाम इस किताब में सबसे ऊपर लिखा है। खुदा ने कहा कि जो उसके बन्दों को चाहता है, खुदा उसे चाहता है। इब्राहीम, मैं तुम्हें सलाम करता हूं, इसलिए कि तुम खुदा के सबसे प्यारे दोस्त हो।"

इब्राहीम बिन अदहम इस बात से बहुत खुश हुए और पहले से अधिक लोगों की सेवा करने लगे।"

"दादी मां, एक बात पूछूं ?", ताशी बड़े अदब से बोली।

"चलो, पूछ लो," दादी मां मुस्कराती हुई बोलीं।

"यह फरिश्ता कौन होता है ?," ताशी ने पूछा।

"फरिश्ता भी खुदा का सेवक होता है, लेकिन इसका काम केवल खुदा की प्रार्थना करना है, या फिर खुदा कोई काम उसे सौंप दे," दादी मां ने ताशी को समझाया।

"फिर क्या हुआ ?," रूमी ने बीच में टोकते हुए कहा।

"फिर एक बहुत अचम्भे में डालने-वाली घटना घटी।

"यह भी एक रात की बात है। इब्राहीम अपने कमरे में सो रहे थे कि छत पर किसी के चलने की आहट सुनकर उनकी आंखें खुल गयीं। उन्हें इस बात पर बड़ी हैरत हुई कि महल के चारों ओर पहरेदारों के होते ए भी कोई छत पर कैसे चला आया।

उन्होंने जोर से आवाज देकर पूछा, "छत पर कौन है ?"

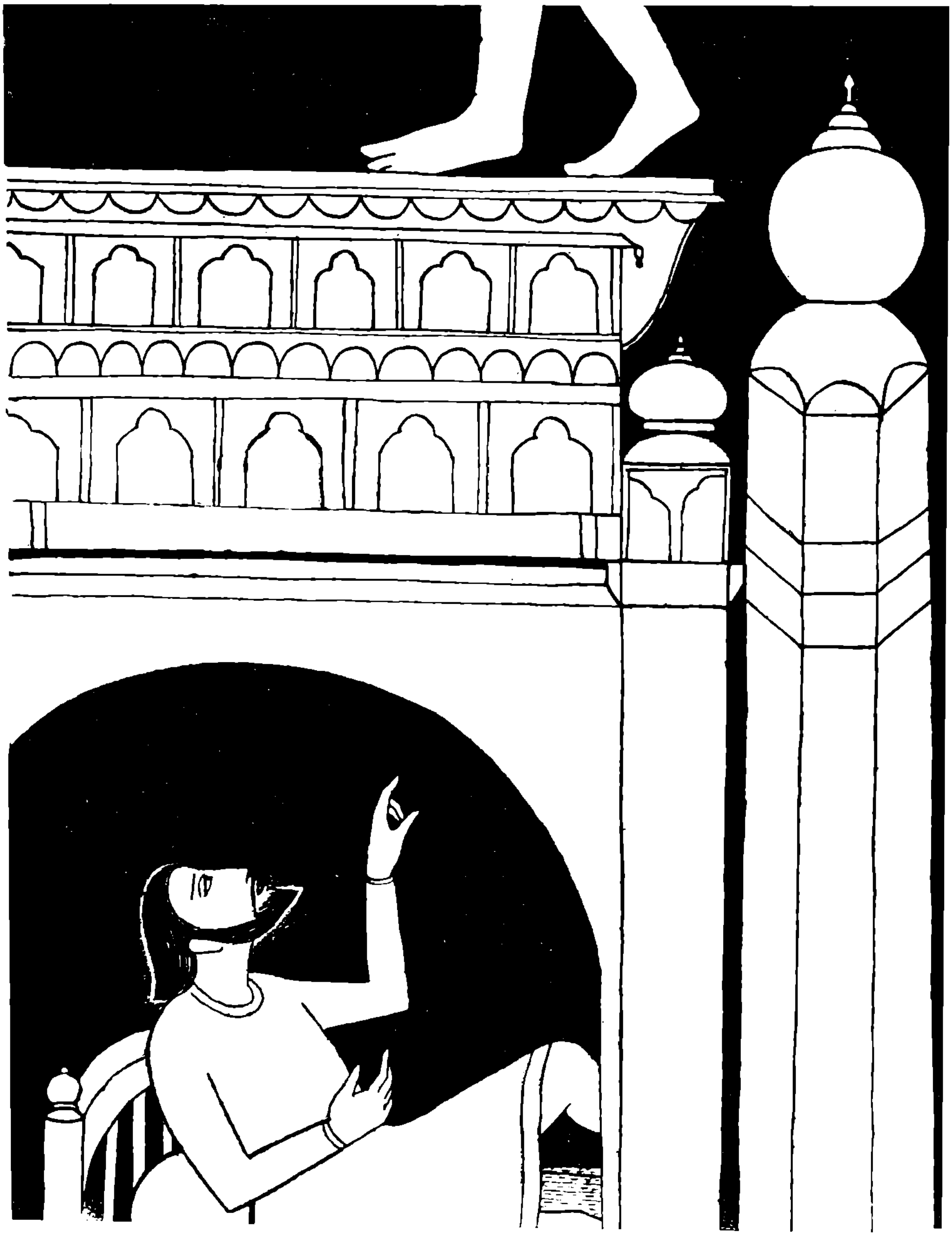

"छत पर कौन है ?"

ऊपर से आवाज आई " मैं, आपका
: पहचानवाला हूं। मेरा ऊंट खो गया
उसे ढूंढ रहा हूं।"

इब्राहीम बिन अदहम को अचरज
ा। उन्होंने कहा, "निरे बेवकूफ हो !
। पर ऊंट को ढूंढ रहे हो ?"

ऊपर से फिर आवाज आई, " और
प मुझसे ज्यादा बेवकूफ हैं कि महल के
दर खुदा को ढूंढ रहे हैं।"

यह आवाज आते ही इब्राहीम बिन
हम की हालत अजब हो गयी। वे
झ गये कि यह गैब की आवाज है।
ा की इच्छा नहीं है कि वे तख्त और
जकाज से चिपटे रहें।

उन्होंने सोचा कि क्या उन्हें राजकाज
झमेलों से अलग रहकर, केवल खुदा
उपासना करनी चाहिए। लेकिन
की प्रजा उनसे इतना प्रेम करती है
उनको अलग कैसे होने देगी ?

इब्राहीम बिन अदहम इसी सोच-
ार में थे कि एक दिन एक अनजान
मी दरबार में आया।

चारों ओर देखने के बाद उसने
हीम बिन अदहम से कहा, "बड़ी
या सराय में रहते हो तुम ?"

इब्राहीम बिन अदहम ने अचरज
उसे देखा और कहा, "यह शानद
दरबार तुम्हें सराय मालूम देता है ?"

"हां !", अनजान आदमी ने कहा

"क्यों ?," इब्राहीम बिन अदहम
पूछा।

"मेरी एक बात का जवाब दो,
अनजान आदमी ने कहा, "तुमसे पह
इस तख्त पर कौन बैठा था ?"

"मेरे पिता," इब्राहीम ने जवा
दिया।

"और तुम्हारे पिता से पहले ?
अनजान आदमी ने पूछा।

"मेरे दादा," इब्राहीम बिन अदह
ने कुछ भी न समझते हुए कहा।

"फिर भी तुम इसे सराय न
समझते ? तुम्हारे बाद कोई दूसरा आद
इस तख्त पर बैठेगा। क्यों ? जहां तु
सदा न रह सको, वह सराय ही तो है।

अनजान आदमी तो यह कहकर च
गया, पर इब्राहीम बिन अदहम की आंख
से एक परदा-सा हट गया। मन औ
मस्तिष्क में जैसे रोशनी की एक बाढ़-स

आ गयी। उस अनजान आदमी ने जो कुछ कहा था, उसका मतलब उनकी समझ में आ गया।

उस रात की बात अभी उनके सामने थी। वे समझ गये कि खुदा उनसे अपना काम लेना चाहता है। उन्हें राजपाट के झमेलों से निकलना चाहिए।

बस एक दिन इब्राहीम बिन अदहम किसी को कुछ बताये बिना, घोड़े पर सवार हो महल से निकल पड़े।

वे शहर से बाहर एक सुनसान जगह पर जा पहुंचे।

उस सुनसान जगह पर एक पेड़ के नीचे, एक अनजान आदमी बैठा हुआ था। वे उसके पास पहुंचे।

सलाम किया और पूछा, "आप कौन हैं?"

अनजान आदमी ने बताया कि मैं खिज हूं और खुदा की आज्ञा से आपको रास्ता बताने आया था।

इब्राहीम बिन अदहम ने खिज के हाथों को चूमा और उनको अपना उस्ताद बना लिया।

खिज ने उनको अच्छी-अच्छी बातें बतायीं और चले गये।

इब्राहीम बिन अदहम वहां से आगे बढ़े। रास्ते में एक गड़ेरिया मिला, जो भेड़ें चरा रहा था। इब्राहीम ने उस गड़ेरिये को अपने शाही कपड़े देकर, उसके फटे-पुराने कपड़े ले लिए।

गड़ेरिये के फटे-पुराने कपड़े पहनने के बाद उन्हें ऐसा लगा, मानो राजपाट का सारा बोझ उनके शरीर से उतर गया हो। उन्हें इससे बड़ा अच्छा लगा। उन्होंने घोड़ा भी गड़ेरिये को दे दिया और पैदल ही आगे बढ़े।

चलते-चलते बहुत दिनों के बाद वे नीशापुर पहुंचे।

बस्ती के बाहर, एक पहाड़ की गुफा में उन्होंने बसेरा किया और दिन-रात खुदा की उपासना में लग गये। इस गुफा में उन्होंने पूरे नौ वर्ष बिताए। इन नौ वर्षों में वे बाहर जाने का केवल इतना काम करते कि रोजाना निकट के जंगल से लकड़ियां काटकर बाजार में बेंच आते। इससे जो पैसे मिलते, उनकी रोटियां खरीदते। अपने खाने के लिए दो-एक रोटियां रख लेते और बाकी दान कर देते।

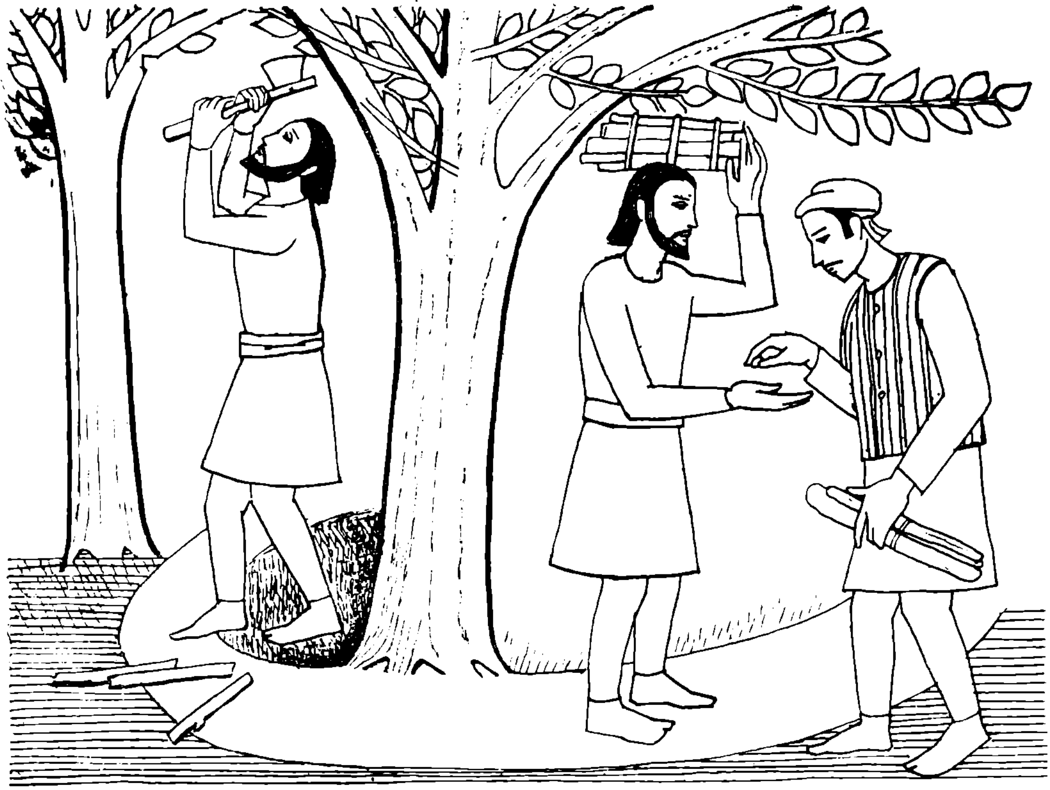

नौ साल के बाद जब संसार की सारी मोह-माया उनके मन से निकल गयी तो वे गुफा से बाहर निकले और हज का इरादा करके मक्का के रास्ते पर हो लिए।

मक्का पास तो था नहीं कि दो दिन में पहुंच जाते। चलते रहे, चलते रहे, यहां तक कि उनके पास खाने-पीने की कोई चीज बाकी न बची।

एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीते—एक सप्ताह बीत गया।

अब तो भूख और कमजोरी से चलना दूभर हो गया। किसी तरह गिरते-पड़ते एक नदी के किनारे पहुंचे। पानी पिया तो भूख और भड़क उठी।

उसी समय उन्हें एक सेव दिखायी दिया, जो पानी में बहता जा रहा था। भूख से दुर्दशा हो रही थी। कुछ सोचे-

समझे बिना उन्होंने सेव पानी से निकाला और पेट की आग बुझा ली।

सेव खाने और पानी पीने से जान-में-जान आयी, तो सोचा कि पता नहीं यह सेव किसके बाग का था। मालिक से पूछे बिना खा लिया है, यह बात अच्छी नहीं है। यह एक तरह की चोरी है जो खुदा को भी नापसन्द होगी।

जिस ओर से सेव बहता आया था, उसी ओर वे किनारे-किनारे चलने लगे ताकि सेव के बाग के मालिक से मिलकर माफी मांगें।

कुछ दूर चलने के बाद एक बाग दिखायी दिया। बाग में सेव-ही-सेव लगे थे। पेड़ों की कुछ डालियां नदी की ओर झुकी हुई थीं। इब्राहीम बिन अदहम ने सोचा कि शायद यही बाग है।

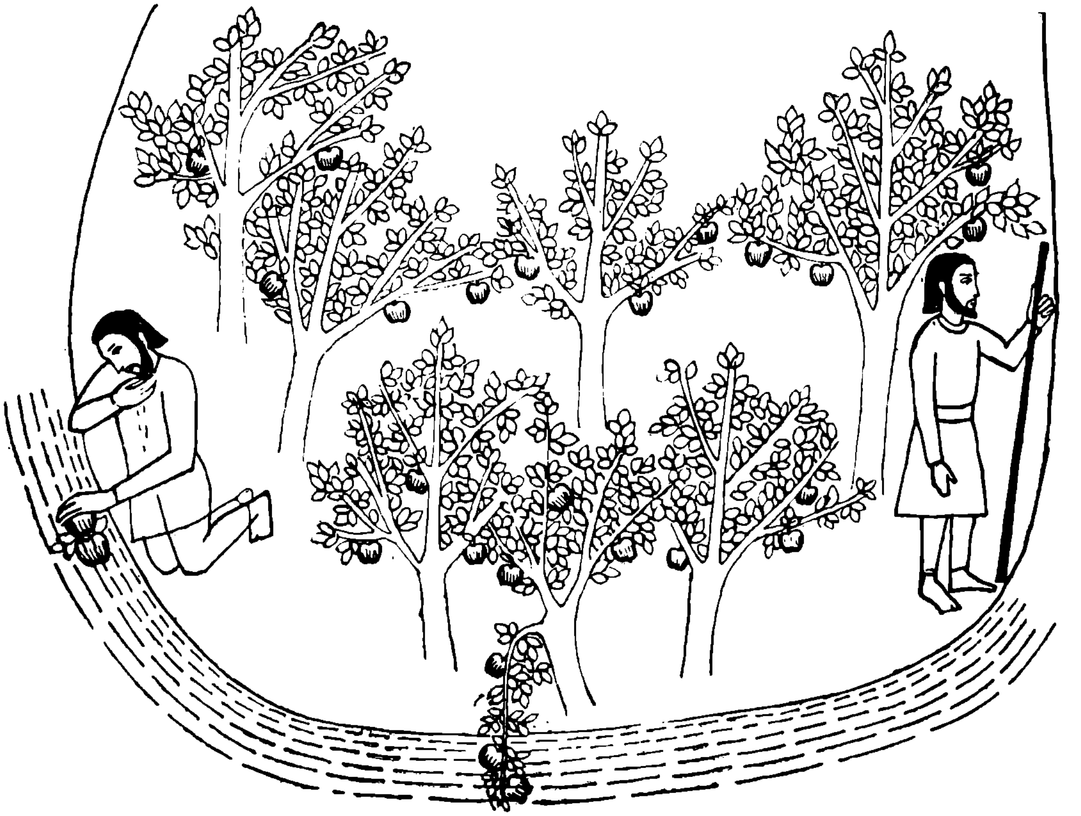

वे बाग में पहुंचे। एक आदमी वहां बैठा हुआ था। इब्राहीम ने उसे सलाम किया और बताया कि उन्होंने भूल से इस बाग का एक सेव खा लिया है और अब उस भूल की माफी मांगने आये हैं।

बाग के मालिक ने सोचा कि जो आदमी नदी से मिलनेवाले सेव को खाकर लज्जित है, वह कितना ईमानदार होगा। यह सोचकर उसने इब्राहीम को बाग की रखवाली पर नौकर रख लिया।

कुछ समय बीतने के बाद वह आदमी एक दिन अपने बाग की सैर को आया।

इब्राहीम से बोला कि कुछ मीठे अनार तोड़कर ले आओ।

इब्राहीम अनार तोड़ लाये।

मालिक ने एक अनार खाया तो खट्टा था। उसे फेंक दिया। दूसरा चखा, वह भी खट्टा निकला। यहांतक कि तीसरा और चौथा अनार भी खट्टा निकला।

मालिक इब्राहीम पर बिगड़ उठा, "तुम्हें इतने दिन इस बाग की देखभाल करते हो गये, अभीतक यह न मालूम कर सके कि मीठे अनार किस पेड़ में हैं?"

इब्राहीम ने जबाब दिया, "आपने मुझे बाग की रखवाली सौंपी थी, फलों को चखने की रजा नहीं दी थी। फिर मुझे कैसे मालूम होता कि किस पेड़ के फल का स्वाद कैसा है?"

बाग का मालिक इब्राहीम की इस ईमानदारी से बहुत खुश हुआ और बोला, "मेरी एक लड़की शादी के योग्य है, लेकिन मुश्किल यह है कि वह अन्धी, गूंगी, बहरी और लंगड़ी है। क्या तुम उससे शादी कर सकते हो?"

इब्राहीम ने कहा, "मुझे और कुछ तो एतराज नहीं, लेकिन लड़की को मेहर में देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।"

मालिक ने कहा, "उसकी चिन्ता न करो। इस बाग की रखवाली करके मेहर चुका देना," और इस तरह इब्राहीम बिन अदहम की शादी हो गयी।

जब उनका सामना अपनी पत्नी से हुआ तो वे बहुत हैरान हुए। वह न अन्धी थी, न गूंगी, न बहरी और न ही लंगड़ी।

उनके अचरज को देख, उस लड़की ने मुस्कराते हुए कहा, "आप परेशान

न हों, मेरे पिता ने आपसे झूठ नहीं कहा था। मैंने आज तक किसी दूसरे आदमी को नहीं देखा, इसलिए अन्धी हूं। कोई बुरी बात नहीं सुनी, इसलिए बहरी हूं। कोई बुरी बात नहीं बोली, इसलिए गूंगी हूं। और किसी बुरी जगह नहीं गयी, इसलिए लंगड़ी हूं।"

इब्राहीम बिन अदहम अपनी पत्नी की बात सुनकर बहुत खुश हुए।

कुछ समय बाद जब इब्राहीम बिन अदहम मक्के के लिए रवाना हुए तो वे एक बच्चे के बाप थे। बच्चा उस समय मां का दूध पीता था।

जब वे मक्का पहुंचे तो उनकी तपस्या और लोगों से प्रेम की चर्चा चारों ओर फैल गयी। दूर-दूर से लोग मिलने के लिए आने लगे और उनसे अच्छी-अच्छी बातें सीखने लगे।

इब्राहीम बिन अदहम रोजाना जंगल से लकड़ियां लाते। बाजार में बेंचते, रोटियां मोल लेते और खुद खाते, साथ-वालों को खिलाते। समय बचता तो खुदा के गुण गाते और लोगों को अच्छी-अच्छी बातें सिखाते।

इब्राहीम बिन अदहम को मक्का में बहुत समय बीत गया।

एक दिन उनके देश बलख के कुछ लोग उनके पास आए। उन लोगों को उनकी दशा देखकर बहुत दुःख हुआ।

वे बोले, "बलख का राज छोड़कर आपको क्या मिला ?"

इब्राहीम उस समय एक चश्मे के किनारे बैठे हुए थे। उनकी बात सुनकर एक सुई उन्होंने चश्मे के पानी में डाल दी। तुरंत ही कई मछलियां अपने-अपने मुंह में सोने-चांदी की सुइयां दबाये बाहर निकलीं।

इब्राहीम ने कहा, "ये नहीं, मेरी अपनी सुई लाओ।"

यह सुनते ही एक दूसरी मछली उनकी फेंकी हुई सुई लेकर ऊपर आ गयी।

इब्राहीम बिन अदहम ने उन लोगों से कहा, "देखो, यह राज अच्छा है या वह, जिसे मैं छोड़ आया हूं ?"

सभी लोग इब्राहीम के आगे झुक गये।"

इतना सुनाने के बाद दादी मां ने कहा, "बादशाह तो कोई भी बन जाता है। कोई तलवार के जोर से तो कोई तिजोरी के बल पर। लेकिन इब्राहीम की तरह जो बादशाहत को एक सराय की तरह पहचान लेते हैं, वे उन लोगों की सेवा में जुट जाते हैं, जो खुदा के साधारण बंदे हैं। खुदा की मुहब्बत भी उन्हें ही नसीब होती है।"

रूमी और ताशी को कहानी बेहद पसंद आयी और वे इब्राहीम की बात भी समझ गये।

रूमी बोला, "दादी मां, अब तुम्हें कभी यह शिकायत सुनने को नहीं मिलेगी कि मैं अपने दोस्तों से झगड़ता हूं। मैं भी सबसे प्यार करूंगा, और सबकी मदद करूंगा।"

ताशी ने रूमी को गले लगा लिया और दादी मां मुस्कराती रहीं। ●

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है। हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

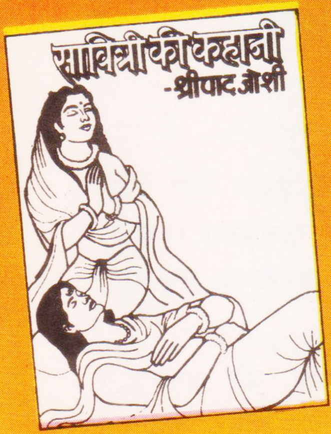

एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली – ११० ०५५